777
777
M
(P)
276
Microfilm

/2011

891.431
J75S

Sinh - Nad, Part 7. Govt. of U.P.

ओ३म्

सिंह-नाद भाग ७

312 in Hindi 777

"सिंहनाद" भयभीतों में भी जोश भरैगा।

नवयुवकों में नवजीवन संचार करैगा॥

लेखक–युवक हृदयकुँवर ज़ोरावरसिंहजी "सिंह कवि", धनुर्विद्या विशारद, भजनोपदेशक, लेक्चरार मैजिक लैन्टर्न
बरसाना (मथुरा)

प्रकाशक–"सिंह निवास" बरसाना (मथुरा)

१६४०
प्रथम बार १००० सर्वाधिकार सुरक्षित है मूल्य =)॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 777
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD Department
Rus. 11
7.12.42

ओ३म्

सिंहनाद

ओ३म् नाम का प्याला

पीकर ओ३म् नाम का प्याला हो जातू मतवाला ॥ टेक ॥

पी सकता है इस प्याले को क्या अदना क्या आला।
हिंदू मुसलमान ईसाई गोरा हो या काला ॥ १ ॥

निर्भय धर्म वीर बन जाता इसका पीने वाला।
डरा नहीं सकते फिर उसको तोप तमंचा भाला ॥ २ ॥

दयानंद ने पीकर इसको माँ का संकट टाला।
अंधकार अज्ञान मिटाकर कर दिया ज्ञान उजाला ॥ ३ ॥

श्रद्धानंद वीर के दिल में जली इसी की ज्वाला।
देश जाति की सेवा का प्रण मरते दम तक पाला ॥ ४ ॥

इसको पी पंजाब केशरी बना लाजपत लाला।
लेखराम ने इसको पीकर अपना होश संभाला ॥ ५ ॥

जिसने भी अपने जीवन में इसे "सिंह कवि" ढाला।
उसी धर्मधारी के गल में पड़ी विजय की माला ॥ ६ ॥

हैदराबाद का धर्म-युद्ध

प्रथम मनाऊँ परमेश्वर को जिसने रचा सकल संसार।
आज तलक जिसकी माया का नहीं किसी ने पाया पार॥
करूँ बंदना भारत माँ की जो है सब जग की शिरमौर।
जिसके सम प्यारी सुखदाई भूमि नहीं दुनियाँ में और॥
इसके पीछे उन वीरों का श्रद्धा सहित करूँ सन्मान।
जिनने देश धर्म के ऊपर हँसकर किये निछावर प्रान॥
प्रसन्नता से निज सर देकर कहलाये हैं वे सरदार।
उनका यश न मिटैगा तब तक जब तक है स्थिर संसार॥
देश धर्म जाती को जिनने सह २ कष्ट किया आज़ाद।
होगा ऐसा कौन जगत में जो न करैगा उनकी याद॥

(हिन्दुओं पर अत्याचार)

धर्म युद्र हैदराबाद का, अब मैं मित्रो करूँ बयान।
किया आर्यवीरों ने जिसमें अपना तन मन धन बलिदान॥
इधर निहत्थे आर्य वीर थे शासक उधर धनी बलवान।
किस प्रकार इन मतवालों ने उनका चर किया अभिमान॥
१०० पीछे ८५ हिंदू बसे रियासत के दरम्यान।
निज़ाम शाहीने उन सबको किया मिटाने का सामान॥
आर्य सभ्यता पर डट २ कर होने लगे वार पर वार।
लगी चमकने लप २ करके ज़ुल्मों की नंगी तलवार॥
ठानी ठान दिलों में ऐसी अपना सारा ज़ोर लगाय।
जैसे भी हो आर्य सभ्यता का दो नाम निशान मिटाय॥
लालच और ख़ौफ़ दिखला कर नगरों ग्रामों के दरम्यान।
धर्म भ्रष्ट की गई रात दिन जबरन ऋषियों की संतान॥

स्कूलों जेलों के अंदर दिन और रात हुई तबलीग़।
ख़ाकसार कहीं करें उपद्रव और कहीं पर मुस्लिम लीग ॥
हिंदी के स्कूल और अख़बार बंद दीने करवाय।
संध्या हवन आरती पूजा के ऊपर दी रोक लगाय ॥
मंदिर नये बिना आज्ञा के कोई भी नहिं सके बनाय।
टूटे फूटे गिरे हुओं की नहीं मरम्मत सकें कराय ॥
लगी अखाड़ों पर पाबंदी और व्याख्यानों पर रोक।
होयं न उत्सव मुहर्रमों में जबरन पड़े मनाना शोक ॥
आज्ञा बिना घरों में भी नहिं हवन कुंड तक सकें बनाय।
ध्वजा पताका देव मंदिरों के ऊपर नहिं सकें लगाय ॥
बीच नगर में गौमाता के गल के ऊपर चलै कटार।
पड़े सुनाई हर हिन्दू को उसकी करुणा भरी पुकार ॥
फेंका गया मांस गौवों का देव मंदिरों के दरम्यान।
भेड़ों के सम निर्दयता से ज़िबह हुई हिंदू संतान ॥
गुंडों द्वारा निर्दयता से किया गया बध वेदप्रकाश।
हँसते २ बलिवेदी पर चढ़ा नवयुवक धर्म प्रकाश ॥
काट काट तन भीमराव का टुकड़े २ दिया बनाय।
संकट दे दे श्यामलाल जी दिये जेल में ही मरवाय ॥
धूल पेठ का हनूमान का मंदिर जबरन दिया जलाय।
मास मुहर्रम आ जाने से दिया दशहरा बंद कराय ॥
मुस्लिम संस्थाओं को प्रायः मिलै रियासत की इम्दाद।
सरकारी सर्विस में भी कम रहै हिन्दुओं की तादाद ॥
जाय भरा हिन्दू जनता के रुपये से जब सारा कोष।
मिलै न उनको कुछ सहायता कैसे हो उनको संतोष ॥
लालच देकर भय दिखलाकर और फ़रेबों से बहकाय।
दिन दुपहर हिन्दू नारिन को जबरन गुंडे लेयं भगाय ॥
करें भ्रष्ट हिन्दू नारिन को ज़बरन बीस २ बदमाश।

बलात्कार से मरी जभी वो फेंक दई कूए में लाश ॥
अपमानित पति ने जाकर के जभी पुलिस में करी पुकार ।
पागल है क्या केस चलैगा हँसकर बोला थानेदार ॥
कहते में भी हम शर्मावें ऐसे हुए वहाँ पर पाप ।
धर्म गये जबरन बेटिन के खड़े २ देखें माँ बाप ॥
माँ बापों ने शरमा करके कपड़े से मुख लिया छिपाय ।
तो फिर संगीनों के बल से जबरन आँखें लीं खुलवाय ॥
एक होय तो हम बतलावें हुए अनेकों अत्याचार ।
जिससे सब हिन्दू जनता में मचा एक दम हाहाकार ॥

(सत्याग्रह का बिगुल)

सहते रहे भेड़ बन हिन्दू यह अन्याय और अपमान ।
कायर और नामर्द बन गई कैसी वीरों की संतान ॥
जब २ हुई धर्म की हानी बढ़े भूमि पर अत्याचार ।
महापुरुष आये तब २ ही करने को उसका उद्धार ॥
त्रेतायुग में जब रावण ने किये प्रजा पर अत्याचार ।
रामचंद्रजी प्रकट हुए तब करने को उसका संहार ॥
कंस दुष्ट के जुल्मों का भी रहा न जब कुछ पारावार ।
जन्म हुआ तब कृष्णचंद्र का करने को उसका प्रतिकार ॥
इसी तरह हैदराबाद में जाती देख क़ौम की लाज ।
रक्षक बन हिन्दू जाती का आगे आया आर्य समाज ॥
भेज २ कर डेपूटेशन करी प्रार्थना बारंबार ।
टस से मस नहिं हुई ज़रा भी लेकिन निज़ाम की सरकार ॥
जब यों करते हुए प्रार्थना बीत गये पूरे छै साल ।
किया न तौभी निज़ामशाही ने कुछ भी इस ओर ख़याल ॥
तब सब आर्य समाजी नेता पंडित उपदेशक विद्वान् ।
अंतिम निर्णय करने पहुंचे सब शोलापुर के दरम्यान ॥
सत्याग्रह को सिमित बनाई करके पूरा सोच विचार ।

श्रीनारायण स्वामी को सौंपे सब कुछ करने के अधिकार।।
अल्टीमेटम दिया उन्होंने तब होकर बिल्कुल लाचार।
सत्याग्रह का बिगुल बजाया गूँजा जिसको सुन संसार।।
सुनते ही आवाज़ बिगुल की छाया सब जनता में जोश।
धावे बोल दिये वीरों ने वेद धर्म का कर जयघोष।।
सर्व प्रथम बुड्ढे सेनापति श्रीनारायण स्वामी महाराज।
फिर श्री चाँदकरण बलधारी सजकर सकल युद्ध के साज।।
तीजे श्रीखुशहालचंद्रजी रणबंका योधा बलवान।
चौथे श्रीधुरेन्द्रजी शास्त्री राजगुरू त्यागी विद्वान।।
वेदव्रत ज्ञानेद्र कृष्णजी सातों महारथी बलवान।
लेकर के जत्थे के जत्थे पहुँचे जेलों के दरम्यान।।
गिरै भेड़िया ज्यों भेड़ों पर जैसे गिरै चिड़ी पर बाज।
त्योंही अन्यायी शासन के ऊपर टूटा आर्य समाज।।
आर्य वीर सब बने सिपाही बनी छावनी आर्य समाज।
धर्म युद्ध में जाने को अब सबने सजे युद्ध के साज।।
भर २ कर स्पेशल ट्रेनें शोलापुर में पहुँची जाय।
सीमा के ऊपर जाकर के सबने डेरे दिये लगाय।।
जगह २ लग गये मोर्चे नाके बंदी लई कराय।
गये हज़ारों की टोली में और भरे जेलों में जाय।।
लाज बचाने को जाती की रखने को पुरुषों का मान।
दल के दल हिंदू वीरों के पहुंचे जेलों के दरम्यान।।
वैद्य डाक्टर वकील मुंशी उपदेशक निर्धन धनवान।
जाकर पहुंचे सब जेलों में बच्चे बूढ़े और जवान।।
कोई पंद्रह कोई अठारह कोई बीस वर्ष के ज्वान।
अल्हड़ ज्वानी के मतवाले बाँके पट्ठा रेख उठान।।
ढाल अहिंसा की लेकर में सत्य धर्म की ले तलवार।
कफ़न बांध कर शिर के ऊपर तन केशरिया कपड़े धार।।

(बलिदान)

ममता मोह छोड़ प्राणों की और हथेली पर रख शीश।
बीस हज़ार गये जेलों में और शहीद हुए तेईस ॥
इतिहासों में पढ़ते थे हम हुए धर्म पर जो बलिदान।
अपनी आँखों सबने देखे वे ही भाग्य नगर दरम्यान ॥
भीमराव, रामा, नानूमल, धर्म वीर श्री वेद प्रकाश।
सत्य नारायण, महादेवजी, पांडुरंगजी धर्म प्रकाश ॥
धर्ममूर्ति श्री श्यामलालजी, फ़क़ीरचंद व व्यंकट राव।
शूरवीर मलखान सिंहजी वीर सुनहरा माधव राव ॥
वदन सिंहजी, रतीरामजी, शांतीप्रकाश परमानंद।
छोटेलाल वीर मर्दाना स्वामी श्री कल्याणानंद ॥
सत्यानंद वीर सन्यासी खांडेराव विष्णु भगवंत।
इन वीरों ने किया धर्म हित अपने तन प्राणों का अंत ॥
इन वीरों पर बदमाशों ने किये अनेकों अत्याचार।
ठोंकी गई कील पैरों में ऊपर पड़ी बेंत की मार ॥
चमड़ी उधड़ गई तन पर से बहने लगी खून की धार।
तोभी शांति पूर्वक हरदम रटते रहे ओ३म् ओंकार ॥
काँच और सीमेन्ट मिलाकर खाने को दी रोटी दाल।
सभी ज़ुल्म हँस हँसकर झेले करके दिखला दिया कमाल ॥
वीर कैदियों के लोहू से खेला गया बेधड़क फाग।
पड़ते पड़ते मार जेल में बच्चे लगे उगलने झाग ॥
फूल सरीखे कोमल बच्चों पर तड़ तड़ बेतों की मार।
जिसको सुनकर काँप उठेगा यह आराम तलब संसार ॥
फूटी आँख किसी की टूटा पैर किसी का टूटा दाँत।
ख़राब भोजन खाते खाते बिगड़ गई पेटों की आँत ॥
हँस हँसकर सब संकट झेले समझ समझ फूलों के हार।
देख अहिंसा अनुशासन को चकित हुआ सारा संसार ॥

(विजय)

करता सहन कब तलक ईश्वर ऐसा ज़ुल्म और अन्याय।
सदा सत्य की विजय हुई है यह इतिहास रहा बतलाय॥
आर्य जवानों की क़ुरबानी आख़िर में लाई यह रंग।
सत्याग्रहियों के जत्थों से आया राज्य निज़ामी तंग॥
जेलें भरीं एक दम सारी बीत गये सारे सामान।
सीमाओं पर पड़े हुए थे लगभग चार हज़ार जवान॥
बोल गई चीं नौकरशाही और गिरी मुंह के बल आय।
भूल गई सब ज़ुल्म सितम को डर से बहुत रही घबड़ाय॥
दिन और रात जाय चिंता में खाना पीना भी न सुहाय।
स्वप्नों में भी आर्य वीर ही चारों ओर पड़े दिखलाय॥
निष्फल हुई हथकड़ी बेड़ी बेंतों और डंडों की मार।
पेशकरी दरख़्वास्त सुलह की होकरके बिलकुल लाचार॥
शर्तें सकल बिना हुज्जत के करी आर्यों की मंजूर।
बोले! जल्दी ही कर देंगे, हम अब सकल शिकायत दूर॥
आर्य जाति के नेताओं ने किया तुरत सत्याग्रह बंद।
क़ैदी सब छुट गये क़ैद से, हुआ राज्य भर में आनंद॥
रियासत की हिंदू जनता में, आई सत्याग्रह से जान।
समझे बकरी भेड़ नहीं हैं, हैं हम ऋषियों की संतान॥
ओ सत्याग्रहियो! ओ वीरो! ओ दुखिया जाती की आश।
वेद धर्म पर मरने वालो हैं तुमको लाखों शाबाश॥
आज तुम्हीं से नवयुवकों पर आर्य जाति को है अभिमान।
गौरव से तुम कह सकते हो हैं हम ऋषियों की संतान॥
आर्य वीर कैसे होते हैं यह दुनिया को दिया दिखाय।
बोटी बोटी कटी तुम्हारी लेकिन मुख से कही न हाय॥
ज़ोरावर सिंह, फ़तह सिंह और बंदा वीर हक़ीक़त राय।
हैं मौजूद अभी भारत में यह दुनियां को दिखाय॥

वीर शहीदो ! रक्त तुम्हारा जायेगा न कभी बेकार।
कर देगा हिंदू जाती में फिर नव जीवन का संचार ॥
सींच उसे अपने लोहू से और हड्डियों की दे खाद।
उजड़ा हुआ धर्म का उपवन तुमने फेर किया आबाद ॥

(नारियों का प्रोत्साहन)

आर्य नारियों ने भी जग को अपने जौहर दिये दिखाय।
शूर वीरता की बातों से कायर दीने वीर बनाय ॥
बेटे के मस्तक पर माँने हँसकर रोली दई लगाय।
हाथ फेर कर शिर के ऊपर इस प्रकार बोला हरषाय ॥
निर्भय हो रण में जा बेटा विजय करें तेरी जगदीश।
पीठ ठोंक करके मैं तेरी देती हूँ दिल से आशीष ॥
विजयी होकर ही घर आना चाहे जान रहे या जाय।
पीठ दिखा देना न कहीं तू अपने कुल को दाग़ लगाय ॥
दूध पिया है तूने मेरा, उसका जौहर दे दिखलाय।
आवश्यकता हो ता हँस करके शिर तक भी देना कटवाय ॥
आर्य नारियाँ जिसशुभ दिन को पैदा करती हैं संतान।
देश धर्म पर मर मिटने का वो शुभ दिन अब पहुंचा आन ॥
सत्याग्रही वीर की पत्नी इतन में फिर पहुंची आय।
फूलों की माला हँस करके अपने पति को दी पहिनाय ॥
भुजा पूज कोमल हाथों से बोली मंद मंद मुसकाय।
ममता मोह छोड़ कर सारी जाओ प्राणेश्वर हरषाय ॥
आज तुम्हारे कंधों पर है धर्म और जाती का भार।
धर्म सभ्यता है बंधन में करना है उसका उद्धार ॥
आर्य वीर होते आए हैं सदैव गौरव पर बलिदान।
जान गँवा करके भी अपनी वो क़ायम रखते हैं शान ॥
मुंह देखूं न दिखाऊँगी मैं आये जो पाकर के हार।
विजयी हो आये जाऊँगी तो फिर बार बार बलिहार ॥

प्यार उमड़ आया भगिनी का पहुंची आ लेकर में थाल।
करी आरती निज भैया की अक्षत दिये कुशल के डाल॥
माता पत्नी और बहन का देखा जब ऐसा उत्साह।
फिर न रही उस वीर युवक के जोश और साहस की थाह॥
धन्य धन्य हैं वे महिलाएं है जिनका ऐसा आदर्श।
गर्व उन्हीं पर कर सकता आज हमारा भारत वर्ष॥
वीर लड़कियाँ चूड़ी लेकर पहुँची नवयुवकों पर जाय।
भाई साहब! सत्याग्रह में दो तुम अपना नाम लिखाय॥
जो मरने से डर लगता हो तो हम देंय उपाय बताय।
चूड़ी तुम पहनों हाथों में झंडा हमको देउ गहाय॥
सुंदर साड़ी पहन हमारी करो रोटियाँ घर में जाय।
नारी समझ न बोले कोई ऐसे जान सहज बच जाय॥
ये बातें सुन महिलाओं की बढ़ा नौजवानों में जोश।
करी तयारी सत्याग्रह की बैठे रह न सके ख़ामोश॥
झोली ले लेकर नारी दल जब पहुँचा जनता में जाय।
दान दिया दोनों हाथों से बित समान सबने हर्षाय॥
सेठ और साहूकारों ने दिये थैलियों के मुंह खोल।
बड़े बड़े कंजूसों के भी आसन गये एक दम डोल॥
मतलब यह है जली देश में जो यह सत्याग्रह की आग।
इसे प्रज्वलित करने में था सब हिंदू जनता का भाग॥

स्वामी दयानंद क्यों पैदा हुए?

हुआ किसलिए चंदन जग में और किसलिए नागर पान।
रामचंद्र जी हुए किसलिए और किसलिए श्री हनुमान॥
हुए किसलिए भूप युधिष्ठिर और किस लिए श्री नंदलाल।
पैदा हुए किसलिये जग में गांधी और जवाहर लाल॥
कांग्रेस का जन्म हुआ क्यों हुआ किसलिये आर्यसमाज।
पैदा हुए किसलिये जग में स्वामी दयानंद महाराज॥

सुगंध शीतलता को चंदन और खाने को नागर पान
रावण बध को रामचन्द्र जी लंक जलाबन को हनुमान ॥
सत्य वचन को भूप युधिष्ठिर कंस पछाड़न को नंदलाल ।
सत्याग्रह को गांधी बाबा बाँका वीर जवाहर लाल ॥
स्वराज्य के हित हुई कांग्रेस हिंदू रक्षक आर्य सम.ज ।
वेद प्रचार हेतु हुए पैदा स्वामी दयानंद महाराज ॥
हिंदू भला चाहते अपना और चाहता देश स्वराज ।
तो सारे मतभेद भुलाकर सब अपना लें आर्य समाज ॥

नवयुवकों से !

ऐ नवयुवकों आज देश में मचा हुआ है हाहाकार ।
होते हैं भारत माता पर तरह तरह के अत्याचार ॥
आर्य जाति दुखियारी देखो रो रो कर कर रही विलाप ।
ऐसे समय ऐश और आरामों में पड़े हुए हैं आप ॥
विधवा बिलख रहीं जाती की होंय अछूतों पर अन्याय ।
दीन अनाथ बिलखते डोलें कटती रोज़ हज़ारों गाय ॥
पैदा अब होते न देशमें राम कृष्ण अर्जुन और भीम ।
फैल रही बेकारी घर घर पाकर अँग्रेज़ी तालीम ॥
ललना लाल लुटें लाखों ही बाँधा बदमाशों ने ज़ोर ।
खुले अखाड़े नौटंकी के आज देश में चारों ओर ॥
जात पाँत औ छुआछूत ने दीने सारे काम बिगार ।
छिन्न भिन्न हो गया संगठन हुई जातियां कई हज़ार ॥
बच्चों और बुड्ढों की शादी मूर्ख लालची रहे रचाय ।
दुखदाई ख़ूनी दहेज ने ग़ज़ब और भी रक्खा ढाय ॥
देख दुर्दशा ऐसी अपनी फिर भी तुम्हें न आता होश ।
सहते हो अपमान नहीं आता है फिर भी कैसे जोश ॥
बच्चे हो यदि भारत माँ के हो यदि ऋषियों की संतान ।
तो तुम कुछ करके दिखलादो वीरो दुनियां के दरम्यान ॥

जिसके अन्न और पानी से बना तुम्हारा दिव्य शरीर।
अबतो उस दुखिया माता की हरलो ऐ नवयुवको पीर॥
सदा सदा नहिं तोरई फूलै यारो सदा न सावन होय।
सदा सदा नहिं चढ़ै जवानी जगमें सदा न जीवै कोय॥
करना हो सो करलो वीरो! फिर यह समय मिलैगा नायं!
पल में प्रलय जगत में होवे यह दिन कहने को रहिजायं॥
सदा सदा हिंदू जाती पर होयं न ऐसे अत्याचार।
देश धर्म पर मर मिटने का अवसर मिले न बारंबार॥
देश धर्म की सेवा करलो जो हो ऋषियों की संतान।
चाहे जान चली जाय वीरो! किंतु न जाने पावे शान॥
स्वर्ग झोपड़ी सब लोगों की, कोई आज मरै कोई काल।
जगमें अमर रहा नहिं कोई सब चल बसे काल के गाल॥
खटिया पर के अयश कमाके जो नर दुनियां में मर जायं।
नाम न ले उनका कोई भी मांस नहीं कौवे तक खायं॥
देश धर्म हित जो मर जावें, सीधे स्वर्ग लोक को जायं।
नाम अमर हो जाय जगत में, कीरति चली युगों युग जायं॥
आत्मा अजर अमर अविनाशी इसका कभी न होता नाश।
नश्वर देह शोक क्या इसका ये मनमें करलो विश्वास॥
जो तुम डरौ मृत्यु से मित्रो तो घर भीतर दुबकौ जाय।
छोड़ मर्दुमी के बाने को भेष जनाना लेउ बनाय॥
लहंगा पहनो घूम घुमारा फुंदा रेशम का लटकाय।
शिर के ऊपर चादर ओढ़ो मुँह घूँघट में लेउ छिपाय॥
नथ और लटकन पहन नाक में दाढ़ी मूछें लेउ मुड़ाय।
कंघी लेकर मांग निकालो माथे बिंदी लेउ लगाय॥
हरी हरी चूड़ी कर में पहनो पैरन बिछुआ लेउ दबाय।
आधी बात कहै ना कोई चाहे धर्म रसातल जाय॥
गैरत है कुछ भी आँखों में है जो स्वाभिमान का ध्यान।

बहता है राणा प्रताप का लहू धमनियों के दरम्यान ॥
तो तन मन धन अपना सारा जाति धर्म हित देउ लगाय ।
नहिं तो पहले से बतलादें घर लो और जगह बनवाय ॥
भारतवर्ष देश बन जावे मित्रो इक दिन पाकिस्तान ।
आर्यवंश और वेदधर्म का मिट जाय जगसे नाम निशान ॥
इससे ओ हिंदू नवयुवको ! अभी समय है जाओ चेत ।
फिर पछताने से क्या होगा जब चिड़ियां चुग लेंगी खेत ॥
हिंदू जाती का रक्षक बन, प्रकट हुआ है आर्य समाज ।
बनो सभासद तुम सब इसके, राखो देश जाति की लाज ॥
इस अपने उपकारी से तुम अलग अलग फिरते हा शोक ।
तो फिर मिटने से दुनियाँ में कौन तुम्हें सकता है रोक ॥
इस अब सारी दुनियां में करदो वैदिक धर्म प्रचार ।
इस जोरावर सिंह आर्य की इतनी विनय करो स्वीकार ॥

सत्याग्रह-विजय

दक्षिण की हिंदू जनता को सत्याग्रह ने बलवान किया ।
जीवन की ज्योति जगा करके साहस बल तेज प्रदान किया ॥
क्रोधित होकर नवयुवकों की आँखों से चिनगारी निकलीं ।
वेदों का और शिवालों का जब गुंडों ने अपमान किया ॥
उत्साह भरे जय घोषों से सारा नभ मंडल गूँज उठा ।
जब उस बुड्ढे सेनापति ने सत्याग्रह का एलान किया ॥
भारत के कोने कोने से जत्थों ने धावे बोल दिये ।
उन सप्त महारथियों ने जब रणभूमी को प्रस्थान किया ॥
बलिदान धर्म पर होने को चल दिए शहीदों के जत्थे ।
जिस समय युद्ध की भेरी ने नवयुवकों का आह्वान किया ॥
हम राम कृष्ण के वंशज हैं सह सकते अत्याचार नहीं ।
हिंदू जाती के बच्चों में पैदा ऐसा अभिमान किया ॥
लें बचा धर्म को धन तो हम दुनियां में फेर कमा लेंगे ।

यों कह कह हिंदू सेठों ने दोनों हाथों से दान किया ॥
हमको निज़ाम से द्वैष नहीं उसके निज़ाम का शिकवा था।
कर दूर निज़ामत की कमियाँ हमने उसका कल्यान किया ॥
'कवि सिंह' तुम्हारे गानों ने वीरत्व भर दिया रग रग में।
कायर बुज़दिल युवकों को भी जोशीला सिंह समान किया ॥

चेतावनी

अभागे हिंदू अब तो होश संभाल।
होश संभाल देख मंडरावे तेरे शिर पर काल ॥ टेक ॥
किसी समय तू ही तू बस कुल दुनियां के दरम्यान रहा।
शांति पूर्वक सारा जग गाता तेरे गुण गान रहा ॥
गुणवान रहा विद्वान रहा धनवान रहा बलवान रहा।
सारे जग से सब बातों में पाता तू नित सन्मान रहा ॥
तन था यह संसार सकल तो तू उस तन की जान रहा।
छोटे बड़े सभी के सुख का तुझको हरदम ध्यान रहा ॥
तेरे झंडे के नीचे था सारा जग ख़ुशहाल ॥ १ ॥
कलह फूट की भेंट जभी तू ने अपने सरदार किये।
फिर तो दुष्ट लुटेरों ने मनमाने अत्याचार किये ॥
लाल और ललना टूटे कर भ्रष्ट ज़लीलो ख्वार किये।
लूट लूट कर माल ख़ज़ाने अटक नदी के पार किये ॥
मथुरा काशी सोमनाथ से नगर जलाकर छार किये।
तोड़ी मूर्ति देवताओं की मंदिर सब मिस्मार किये ॥
है दिन रात बजाता फिर भी तू मंदिर में टाल ॥ २ ॥
एक साथ चालीस ज़नों की बेध कलाई तारों में।
दो दो रुपये में था बेचा कर करके खड़ा कतारों में ॥
गाय और भैंसों का सौदा हुआ सदा व्यापारों में।
होकरके इंसान बिका तू ग़ज़नी के बाज़ारों में ॥

पकड़ पकड़ करके ज़िंदा चुनवाया तू दीवारों में।
दीवारें भी चुनी गई तेरे ख़ूनों के गारों में॥
गर्म संडसियों से खिंचवाई तेरे तन की खाल॥ ३॥

तेरे ही साथी तुझको अब भी तो रोज़ सताते हैं।
तरह तरह के बिना बात के झगड़े कर धमकाते हैं॥
कभी गाय की क़ुर्बानी को अपना हक़ बतलाते हैं।
कभी शंख का और कभी बाजे का प्रश्न उठाते हैं॥
कभी रूस का और कभी क़ाबुल का डर दिखलाते हैं।
धोखे से स्त्री बच्चों को जबरन कभी भगाते हैं॥
भेड़ों के मानिंद हो रहा तू दिन रात हलाल॥ ४॥

ख़ुद भी तू निज अंग अछूतों को निशदिन ठुकराता है।
दीन अनाथों विधवाओं को भी दिन रात सताता है॥
बिछुड़े भाई आते हैं तो धर्म धर्म चिल्लाता है।
दूर दूर कर गौरक्षक से भक्षक उन्हें बनाता है॥
इसी तरह से दिन दिन ग़ैरों की तादाद बढ़ाता है।
अगर कभी झगड़ा हो तो फिर मार उन्हीं से खाता है॥
अपने हाथों बुला रहा है तू अपना ही काल॥ ५॥

राजपाट खोकर सारा अब दीन हीन कंगाल हुआ।
किसी समय था वीर केशरी लेकिन आज शृगाल हुआ॥
उन्नति में था किया कभी अवनति में आज कमाल हुआ।
ज्ञान गया विज्ञान गया गौरव न रहा पामाल हुआ॥
सभ्य लुटेरों से घर में रहना भी एक बवाल हुआ।
लेकिन ओ कम्बख़्त कभी क्या इसका तुझे ख़याल हुआ॥
उसी दशा में तुझे हो गये आज हज़ारों साल॥ ६॥

ध्यान लगाके सुन जो अब भी नहीं होश में आवेगा।
वही बेसुरा औ बेढंगा बेतुक ढोल बजावेगा॥

अछूत बेवा अनाथ बिछुड़ों को भी नहिं अपनावेगा।
अपने घर में अपने ही हाथों से आग लगावेगा॥
थप्पड़ दिखलाने वालों में घूँसा नहीं जमावेगा।
तो "कविसिंह" बहुत जल्दी तू दुनियां से मिट जावेगा॥
है तू सिंह पहन रक्खी है क्यों गदहे की खाल॥ ७॥

विनय

भगवान दो सहारा भारत की नारियों को।
हे नाथ भूल बैठे क्यों इन बिचारियों को॥
शिक्षित व सभ्य बन के निज जाति को उठाएं।
बल और बुद्धि दीजै ऐसी कुमारियों को॥
कर्तव्य क्या है माँ का? समझें इसे भली विध।
दें जन्म भीष्म लक्ष्मण से ब्रह्म चारियों को॥
अबला बनी हुई हैं बन जायँ सिंहनी सब।
दहलायँ दुष्ट लखिकर इनकी कटारियों को॥
संकट हो देश पर जब तब वीर वेश धारें।
बन जायँ वीर, रखदें तह करके सारियों को॥
खल शत्रुओं के दल में मच जाय खलबलाहट।
रणभूमि में बढ़ें जब लेकर दुधारियों को॥
चमके प्रभा जगत में जिनकी सदृश प्रभाकर।
"कविसिंह" पति बनाएं उन क्रान्ति कारियों को॥

चेतावनी

तेरे पूजन को भगवान । बना मन मंदिर आलीशान ॥

टेक–उठो बहनों तज के अज्ञान । करो निज जीवन का कल्याण ॥

तुम सो चुकी बहुत अब जागो । आलस औ निद्रा को त्यागो ।
करो फिर भारत का उत्थान ॥ १ ॥

सबला बन कुछ कर दिखलाओ । निर्बलता को मार भगाओ ।
कमर में बाँधो आप कृपान ॥ २ ॥

गंदे गीत कभी मत गाओ । सोता भारत देश जगाओ ।
गाकर देश भक्ति का गान ॥ ३ ॥

मुख निज कुरीतियों से मोड़ो । सैयद क़ब्र पूजना छोड़ो ।
अगर हो ऋषियों की संतान ॥ ४ ॥

सीता सावित्री बन जाओ । बनकर सरस्वती दिखलाओ ।
देश पर हो जाओ बलिदान ॥ ५ ॥

जो दुनियां में क्रान्ति मचादें । जो गुंडों को नाच नचादें ।
बनाओ सुत "कविसिंह" समान ॥ ६ ॥

IMPERIAL RECORD
Department

आर्य आयुर्वेदिक औषधालय लखनऊ की ४५ वर्ष की अनुभूति औषधियाँ

आर्य सुधा—कफ़, खाँसी, हैज़ा, बदहज़्मी, पेट दर्द, मतली, क़ै, दस्त, प्यास, आदि रोगों की अचूक दवा मू० प्रति शीशी ।)

आर्य बालजीवन—बच्चों के सूखा रोग की शर्तिया दवा मू० प्रति शीशी ।।)

आर्य दाद नाशक—बिना जलन और कष्ट के दाद को जड़ से खोनेवाली दवा मू० ।)

आर्य मकरध्वज बटी—वीर्य पौष्टिक, बल वर्द्धक, नपुंसकता नाशक, चमत्कारी अनुभूति दवा मू० प्रति शीशी १।।)

नोट—इसके अतरिक्त हमारे यहाँ प्रत्येक रोग की आयुर्वेदिक औषधियाँ हर समय तैयार मिलेंगी। पत्र द्वारा रोग का पूर्ण विवरण भेजकर घर बैठे दवा मँगाकर एक बार परीक्षा करें।

पता—१८ गन्ना गली लखनऊ।

कुँवर सेन एण्ड को पीलीभीत—के हारमोनियम सस्ते मजबूत, और सुरीले होते हैं। एक बार परीक्षा करें।

आर्य प्रिंटिंग एन्ड पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ।